मयंक शर्मा
सीईओ, स्वामी समर्थ मैकेनाइज सेवा समिति, सिवनी

युवाओं को तकनीकी रूप से सक्षम कर आत्मनिर्भर बना रहे

प्रदेश की बड़ी स्किल डेवलपमेंट संस्थाओं के बीच बनाई खुद की पहचान, हर वर्ष 5000 से ज्यादा युवाओं को दे रहे ट्रेनिंग

आईटी को इन्फ्रास्ट्रक्चर अपने आप में समेटे बना हुआ है। इस हुनर के मालिक हैं उनके मालिक मैकेनाइज सेवा समिति के संचालक और सीईओ श्री मयंक शर्मा जी। देश की बेरोजगारी मिटाने डेवलपमेंट सेन्टरों के बीच मयंक जी अपनी अलग पहचान रखते हैं। इनकी संस्था, जहां कई बड़े महानगरों में अपनी ब्रांचेज का संचालन कर रही है, वहीं मयंक जी ने सेमिनारों के माध्यम को अपना माध्यम बना रखा है। उनका मानना है कि अकसर हम लोग डॉक्टर और इंजीनियर के क्षेत्र में ही भिड़ते हैं। लेकिन उन तक जानकारी पहुंचाकर उन्हें अपनी जिंदगी में कुछ नया करने के लिए प्रेरित करना ही मुख्य काम है। इसे मैकेनाइज सेंटर और इंजीनियरिंग कॉलेज के साथ मिलकर वे पूरा कर रहे हैं।

पारंपरिक शिक्षा में बदलाव

मयंक जी का कहना है कि हमारे यहां का पारंपरिक सिस्टम ऐसा है, जो युवाओं को परंपरागत शिक्षा से बांध दे, लेकिन उनकी रुचि को ध्यान में रखकर काम नहीं करता। मयंक जी ने वर्ष 2020 में शुरू कई विंग्स हैं। एक का फंडा यही था कि जमाना कोचिंग में उतरे तब उसमें नया कि कोचिंग में ऐसा शुरू से पढ़ाना है, जहां तक शुरू की परंपरा को पार्ट बनाकर उन्हें नौकरी आसानी सेक्टर में बहुत आसानी आया था, जिसके चलते अलग-अलग आईटी कंपनियों की साख पर बट्टा लगा और बहुत लोगों को अपनी नौकरियां गवानी पड़ीं। तभी मयंक जी ने ये तय किया कि अब वे नौकरी करने के बजाय दूसरों को इस लायक बनाएंगे कि उन्हें किसी नौकरी के लिए परेशान न होना पड़े। नया पूरी की धर्म के चलते उन्होंने एक निजी कंपनी में काम का काम शुरू किया, जिसके एवज में उन्हें 8,000 रुपए महीना वेतन मिलता था। उन्होंने अपने इस वेतन को इकट्ठा कर उसी साल से वर्ष 2011 में स्वामी समर्थ मैकेनाइज सेवा समिति की स्थापना की।

6 आईटीआई कॉलेज की स्थापना

मयंक जी उनका मैकेनाइज के साथ सोशल से 6 आईटीआई कॉलेजों का 50 से ज्यादा लिंक डेवलपमेंट सेंटरों का संचालन करते हैं। वे सभी जगहों से प्रत्येक साल लगभग 5000 युवाओं को तैयार कर रहे हैं। इनकी संस्था जेनरल डेवलपमेंट कमिटियों से संबद्ध है। जिसमें सभी जगह के निवासरत युवाओं को रोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

गांवों को बनाया आत्मनिर्भर

मयंक जी अपनी संस्था के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में स्किल डेवलपमेंट सेंटरों खोलने उन्हें गांव-गांव जाकर योजना निर्माण के तहत ट्रेनिंग दे रहे हैं। जिसके तहत वे मैकेनाइज-कुशल युवाओं को रोजगार दिलाए, अपना काम पर रहे हैं। ऐसी ही संस्थान कुशलता से चल रहे हैं। मयंक जी की इसी सोच का नतीजा है कि कई सभी संस्थाओं ने मिलकर मैकेनाइज सेवा समिति को एक सोच के साथ जोड़ा है।

भविष्य में बड़ी योजनाएं

मयंक जी का कहना है कि वे जिले में रोजगार दिलाने डेवलपमेंट में ही अपने अपने बारे नहीं सोचना चाहते। वे अपनी इस मुहिम को गांवों तक ले जाने और कुशल बनाने के लिए अपने प्रयास में लगे हैं। 100 युवाओं के हुनर को निखारने और उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने की जिम्मेदारी मयंक जी ने ले रखी है। उनका कहना है कि समाज कुछ कर सकते हैं, सकारात्मक रवैये को अपना कर इसमें वे कामियाबी भी आए और इसमें सफल निकलते हैं यह मुख्य बात है।

मयंक जी के शब्दों में

- मैं खुद एक ही कॉलेज में पढ़ा। निजीकरण से शिक्षा की कमर टूटती है, मैं अपने परिवार के साथ जिला मुख्यालय में रहा। इसलिए मेरा जीवन ऐसा ही रहा है।
- कोचिंग कोचिंग पर मुझे पीड़ा नहीं आया करता है। मैंने अपने लिए ही कई बड़े प्रोजेक्ट्स की है, जिनसे मैं खुद कोचिंग में ही तैयार करता हूं।
- [illegible] मैं कोचिंग में जाकर उन्हें समझाने की कोशिश करता हूं। इसके अलावा जो भी दोस्त मेरी जिंदगी में आए हैं, मैं उनसे सीखने की कोशिश करता हूं।

संजीव साहू
मैनेजिंग डायरेक्टर, सोनिया फूडस्टुफ इंडिया प्राइवेट लि., सिवनी

20 लाख के टर्नओवर वाली कंपनी को 25 करोड़ रूपए तक पहुंचाया

टेलीकॉम की जॉब छोड़कर पिता के व्यवसाय से जुड़े, परिवार के साथ-साथ 150 लोगों को अपने साथ जोड़ा और आत्मनिर्भर बनाया

सफलता और तरक्की का एक सर्वमान्य फंडा बताते हैं कि जिंदगी जितनी चली होगी, वे भी खत्म नहीं बनते जिन्हें तय होते हैं, मंजिल हमारे वे बना करते हैं, जिनके हम होंगे। ऐसे ही उस छोटे से या बड़ी, कुछ इसके होगा हमें और ले जाने बनाए रखते हैं। सफलता की इन्हें दर है अडिग पंकज में रहे दिखाई देते हैं, पंकज फूडस्टुफ इंडिया प्रा. लि. के एमडी श्री संजीव साहू जी संजीव फिलहाल अपने उम्र के 34वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। लेकिन उनकी सफलता का जो मुकाम हासिल किया है, वह कई युवाओं को मिलना भी नहीं मुमकिन होता। संजीव के पिता सत्यनारायण प्रसाद साहू जी अपनी खुद की किराने की दुकान चलाते थे। उन्होंने इन्हें इस बात का एहसास भान रहा कि वे अपनी मेहनत और कर्मठता को खुद के लिए ही इस्तेमाल करेंगे, उसे किसी और के लिए नौकरी करके गवाएंगे नहीं। पिता की यही सोच संजीव जी की कार्यशैली और लोग में भी इन्हें मिली है। इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बीई करने के बाद जाने नोएडा से मोटिव भी लिया है। बावजूद इसके वे शुरू से ही खुद के लिए और अपने परिवार के लिए एक बिजनेस स्थापित खड़ा करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अपने पिता के व्यवसाय को ही चुना और उसे ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

परिवार की बनाया ताकत, समाज के लिए समर्पित

संजीव साहू का मानना है कि पिता जी के संघर्ष कम नहीं है, वह सिर्फ हमारे के लिए नहीं, बल्कि उन्होंने उनके साथ सभी रिश्तेदारों और परिवार के हर सदस्य को भी जोड़ने का प्रयास किया है। उनका परिवार में एक व्यक्ति भी बिना नहीं रहा या व्यवसाय उनका हमेशा से ही उनके